राजधर्म

कुछ ऐतिहासिक प्रसंग

(बुद्धवाणी के परिप्रेक्ष्य में)

आचार्य श्री सत्यनारायण गोयन्का

राजधर्म

[कुछ ऐतिहासिक प्रसंग]

विपश्यनाचार्य श्री सत्यनारायणजी गोयन्का

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी

राजधर्म

विषय-सूची

प्रकाशकीय [v]

भगवान बुद्ध और 'जंबुद्वीप' १

१. राजधर्म पर दिये गये बुद्ध के उपदेश ३
२. बुद्ध की 'अहिंसा' का राष्ट्र पर प्रभाव ५
३. सम्राट अशोक द्वारा सेना का निःशस्त्रीकरण ५
४. बुद्ध के राजधर्म की प्रासंगिकता ७
५. बुद्धानुयायी शासकों के युद्ध अभियान ८
   मगध राजकुमार अभय ८
   कोशलनरेश प्रसेनजित ९
   मल्ल राजकुमार बंधुल १०
   युद्धमंत्री संतति १०
६. देश की आंतरिक सुरक्षा के प्रति आतुरता १०
७. सम्राट अशोक द्वारा देश की आंतरिक शांति तथा सुरक्षा के लिए उठाये गये कदम १२
८. सम्राट अशोक द्वारा अपनी नीतियों को कारगर बनाने के लिए उठाये गये कदम १६
९. सम्राट अशोक की आतंकवाद तथा सरहदी आक्रमणों से निपटने की तजवीज १९
१०. अशोक के अयोग्य उत्तराधिकारी २७

परिशिष्ट

(१) गणराज्य की सुरक्षा कैसे हो! २८
(२) शाक्यों और कोलियों के गणतंत्र का विनाश क्यों हुआ? ... ३९
(३) देश की बाह्य सुरक्षा ५८
(४) अशोक के अभिलेखों का उनके मूल स्वरूप सहित पुनरवतरण ६४
   विपश्यना परिचय.....६८
   विपश्यना साहित्य **६९**
   विपश्यना साधना के केंद्र **७२**

लेखक परिचय

आचार्य श्री सत्यनारायणजी गोयन्का के प्रपितामह भारत से बरमा जाकर व्यापार-धंधे में लग गये थे। जनवरी १९२४ में मांडले शहर में उनका जन्म हुआ। बचपन से ही वे अत्यंत कुशाग्रबुद्धि और मिलनसार व्यक्ति थे। हाईस्कूल की परीक्षा में उन्होंने पूरे बरमा में प्रथम स्थान प्राप्त किया। पारिवारिक कारणों से यद्यपि वे उच्च शिक्षा नहीं प्राप्त कर सके फिर भी व्यापार-उद्योग में लगे तो उसमें भी शीर्षस्थ ऊंचाइयों को चूमा और समाज एवं सरकार में उच्च प्रतिष्ठा प्राप्त की। अपनी विलक्षण बुद्धि, कर्मठता, स्वाध्याय और 'विपश्यना' साधना के बल पर वे गंभीर-से-गंभीर विषय की भी बहुत गहरी पकड़ रखते हैं। 'विपश्यना' उन्होंने बरमा के अकाउंटेंट जनरल गृहस्थ आचार्य सयाजी ऊ बा खिन से १९५५ में सीखी और तब से वे इसके गहन उपासक बन गये। इसके पूर्व बचपन से ही ईशभक्ति में आकंठ डूबे हुए, स्वाध्याय के बल पर ही गीता आदि विषयों पर सार्वजनिक प्रवचन दिया करते थे। अनेक प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अगुआ ही नहीं, स्वरचित कवितापाठ भी करते थे और मंचकला आदि सार्वजनिक कार्यक्रमों का संचालन भी।

फिर भी 'विपश्यना' का अभ्यास करते हुए विगत चौदह वर्षों तक उन्हें जो लाभ प्राप्त हुआ, उसकी कोई तुलना नहीं थी। योग्य पात्र देख कर सयाजी ऊ बा खिन ने उन्हें विपश्यना सिखाने की अनुज्ञा दी और जून १९६९ में भारत आ कर, व्यापार-धंधे से सर्वथा मुक्त हो कर, वे इसके प्रशिक्षण में लग गये और तब से लेकर आज तक इसके प्रशिक्षण द्वारा लाखों लोगों के कल्याणमित्र बने हुए हैं। विश्व भर में लगभग १०० विपश्यना केंद्र स्थापित हो चुके हैं और लगभग ८०० सहायक आचार्य उनके इस सर्वहितकारी मंगलकार्य में साथ दे रहे हैं।

इगतपुरी में विपश्यना का मुख्य केंद्र है जहां पटिपत्ति, अर्थात स्वानुभव, और परियत्ति, अर्थात साहित्यिक विषयों, पर वैज्ञानिक अनुसंधान की आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध हैं। 'विपश्यना विशोधन विन्यास' इसमें सक्रिय भूमिका निभा रहा है। विश्व के सभी क्षेत्रों के लोग इस वैज्ञानिक साधना पद्धति से लाभान्वित हो रहे हैं। इसी प्रकार अधिक-से-अधिक लोग इस विद्या का लाभ उठायें यही मंगल कामना है।

विपश्यना विशोधन विन्यास

प्रकाशकीय

बुद्धवाणी में ऐसे अनेक प्रसंग आते हैं जिनसे यह पता चलता है कि भगवान के जीवनकाल में भी कोई-कोई लोग उनके द्वारा कही हुई बात को ठीक से न समझ कर मिथ्या धारणा के शिकार हो जाते और किन्हीं अनर्गल बातों का प्रचार करने में लग जाते। जब भगवान के पास कोई ऐसी बात पहुँचती तो वे उस व्यक्ति को अपने पास बुला कर उसकी भ्रांति का निवारण कर दिया करते।

उदाहरणतया, मज्झिमनिकाय के 'महातण्हासङ्खयसुत्त' में यह दर्शाया गया है कि साति नाम का कोई व्यक्ति भी ऐसी ही किसी गलत धारणा का शिकार हो गया और इसका प्रचार करने में लग गया। भगवान को यह मालूम होने पर उन्होंने उसे अपने पास बुलवा कर कहा -- 'मोघपुरुष! तुमने किसको मुझे ऐसा उपदेश देते हुए सुना है? मैंने तो यह बात नहीं कही। तू बात को ठीक से न समझ कर हम पर लांछन लगा रहा है और पाप कमा रहा है। यह दीर्घ काल तक तेरे अहित एवं दुःख का कारण बनेगा।' तत्पश्चात उन्होंने भिक्षु-संघ के सम्मुख सारी बात का पुनः खुलासा किया।

ऐसे ही और प्रसंग भी हैं जैसे इसी निकाय के 'महाकम्मविभङ्गसुत्त' का प्रकरण।

और ऐसे ही अन्यान्य भी।

.....

भगवान का महापरिनिर्वाण हो जाने के पश्चात उस समय के प्रज्ञासंपन्न भिक्षु ही बुद्धवाणी का हवाला दे देकर भ्रांति-निवारण का काम किया करते थे। समय समय पर संपन्न हुई धम्मसंगीतियों से यह तथ्य प्रकाश में आता है। पर जब न तो भगवान रहे और न ही बुद्धवाणी (जो कि किन्हीं कारणों से भारतवर्ष से सदियों पहले लुप्त हो गयी थी), तब यह काम कौन करे? किसी को क्या मालूम कि किसी सम्यकसंबुद्ध ने क्या बात कही थी और जो कुछ कहा उसका सही आशय क्या था। ऐसी स्थिति में भारत में बुद्ध की शिक्षा के बारे में अनेक प्रकार की भ्रांतियां पनपने लगीं जिनका बुद्धवाणी के नितांत अभाव में कोई भी निराकरण नहीं कर पाया। समय बीतते-बीतते, कोई निराकरण न होने से, वे ऐसे मान्य की जाने लगीं मानों हों सत्य, यथार्थ, प्रामाणिक, तथ्यात्मक, वास्तविक, हकीकी।

.....

लगता है ऐसे ही प्रकरणों को देख कर 'न्यायावलि' में यह 'न्याय' जोड़ा गया--

'यस्याज्ञानं भ्रमस्तस्य'

अर्थात, जिसे अज्ञान होगा उसको भ्रांति होगी ही।

.....

अस्तु, अब कल्याणमित्र श्री सत्यनारायण गोयन्का जी के अथक प्रयासों से म्यंमा देश में भारत की धरोहर के रूप में पड़ी हुई सारी-की-सारी बुद्धवाणी अपने मूल रूप में भारत में आ पहुँची है और 'विपश्यना' साधना के आधार पर इसके सही स्वरूप को परख भी लिया गया है। इस प्रकार अब यह संभव हो गया है कि इस वाणी के आधार पर भगवान बुद्ध की शिक्षा के बारे में देश में प्रचलित भ्रांतियों का निवारण किया जा सके। यह एक परम पुनीत कार्य है जिसे श्री गोयन्का जी ने हाथ में लिया है। इस पुस्तिका में भगवान बुद्ध की शिक्षा और उनके महान अनुयायी सम्राट अशोक के कार्यकलापों को लेकर कुछ एक मिथ्या धारणाओं का निराकरण किया गया है। इन धारणाओं के कारण भारत के उज्ज्वल इतिहास पर कालिख पुती रही जो अब, निःसदेह, दूर हो पायगी।

.....

पुस्तिका के आरंभ में जंबुद्वीप (भारत) में सम्यकसंबुद्ध का जन्म होना संकेतित है। सम्यकसंबुद्ध का अनूठापन इसी बात में है कि वह जिस क्षण संबोधि प्राप्त करता है और जिस क्षण शरीर त्यागता है उस संपूर्ण अवधि में जो कुछ प्रज्ञप्त करता है वह शाश्वत सत्य पर आधारित तथा सर्वहितकारी होता है। अतः इसके द्वारा प्रज्ञप्त राजधर्म भी शाश्वत सत्य पर आधारित है अतः इसका नितांत लोकोपकारी होना स्वाभाविक है। इस पुस्तिका में सम्यकसंबुद्ध की अद्वितीय छवि सामने लाने के उपरांत ही उनके द्वारा प्रज्ञप्त राजधर्म को लेकर लोक-प्रचलित भ्रांतियों के निराकरण से संबंधित चर्चा आरंभ की गयी है।

हमें लगता है कि इस पुस्तिका के माध्यम से समझदार लोग भगवान बुद्ध की शिक्षा तथा उनके महान अनुयायी सम्राट अशोक के कार्यकलापों के बारे में अपनी मिथ्या दृष्टि को त्याग कर उसे सम्यक बना पायेंगे।

पाठकवृंद के हित-सुख के लिए मंगल कामना करते हुए,

विपश्यना विशोधन विन्यास